दस साल का हिसाब किताब

रिपोर्ट कार्ड 2014-24

महंगाई

लोकतंत्र का सार यह है कि हम सरकारों को उनके दावों और वादों के हिसाब से जवाबदेह बनाएं। लेकिन हाल के वर्षों में सबसे बड़ी क्षति जवाबदेही के विचार को पहुंची है। मीडिया द्वारा विभाजनकारी और अंधराष्ट्रवादी सामग्री का प्रसार, सामूहिक भूलने की बीमारी को बढ़ावा देता है। यह रिपोर्ट कार्ड (हालांकि निर्णायक नहीं) फाइनेंशियल एकाउंटेबिलिटी नेटवर्क इंडिया की एक श्रृंखला का हिस्सा है, जो वित्तीय और आर्थिक दृष्टिकोण से विभिन्न क्षेत्रों में सरकार के प्रदर्शन के कुछ दावों और उनकी वास्तविकता पर नज़र डालने और उजागर करने का एक प्रयास है।

फाइनेंशियल एकाउंटेबिलिटी नेटवर्क

दावे

- "कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोना चाहिए", "हमने मुद्रास्फीति को काबू में करने का वादा किया है। हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं" उन्होंने कहा। मोदी ने कहा कि "हम मुद्रास्फित को काबू में करेंगे, इसलिए नहीं की यह हमारा चुनावी वादा है, बल्कि इसलिए क्यूंकि हम चाहते हैं कि हर गरीब की पहुँच में भोजन हो।" वो इसमें जोड़ते हुए कहते हैं कि "यह हम सबकी सामूहिक ज़िम्मेदारी है। अपने चुनावी घोषणा पत्र में भाजपा ने वादा किया था कि वो महंगाई पे काबू करेगी अगर वो सत्ता में आयी।

- भाजपा के 2014 के चुनावी घोषणा पत्र में कहा गया था कि "खाने में तेज़ी से बढ़ती हुई महंगाई की वजह से घरों का बजट बिगड़ गया है और इसकी वजह से पूरी अर्थव्यवस्था में, कांग्रेस नेतृत्व की UPA सरकार में, तेज़ी से मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी हो रही है। सबसे बुरी बात है कि इसकी वजह से लाखों लोगों की पोषण की सुरक्षा भी खतरे में पड़ गयी है। हालाँकि कांग्रेस नेतृत्व की UPA सरकार लोगों की इस परेशानी से उदासीन और असंवेदनशील बनी हुई है। सरकार गुमराह करने वाले कामों में संलिप्त है। भाजपा नेतृत्व की सरकार का कीमतों पर काबू करने का रिकॉर्ड हमारे बढ़ती मुद्रास्फीति और बढ़ते ब्याज दर के कुचक्र को तोड़ने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमारा तत्काल कार्य मुद्रास्फीति को काबू में करने का होगा।"
- अपने गुजरात के मुख्यमंत्री के कार्यकाल में मोदी जब उपभोक्ता कार्यों के समूह के अध्यक्ष थे तब उन्होंने खाद्य महंगाई पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी जिसमें महंगाई को काबू में करने के लिए व्यावहारिक कदमों के दावे किये गए थे।
- "कांग्रेस ने महंगाई को 100 दिन में काबू करने का वादा किया था, पर क्या वो अपने इस वादे पर खरी उतरी? उन लोगों का कभी भरोसा नहीं करना चाहिए जो जनता का विश्वास तोड़ते हैं। अगर वाजपेयीजी और मोरारजी देसाई की सरकारें महंगाई रोक सकती हैं तो हम क्यों नहीं? मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भाजपा सरकार 2014 में इसे पूरा करेगी!"
- सरकार महंगाई को कम करने के लिए और कदम उठाएगी, मोदी ने 77 वें स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा।
- 50 रूपये की बढ़ोतरी एलपीजी में!!!!! और यह खुद को आम आदमी की सरकार बुलाते हैं। कितनी शर्म की बात है!", स्मृति ईरानी ने ये 2011 में ट्वीट किया था।
- महंगाई बढ़ रही है! कांग्रेस को कोई फर्क नहीं पड़ता क्यूंकि वह आम आदमी से वादा करके सत्ता में आयी न कि आम औरत से...और यह औरतें हैं जो ज़्यादा पीड़ित हैं!" मोदी न 2011 में ट्वीट किया।

सच्चाई

मज़े की बात है कि भाजपा के 2019 के चुनावी घोषणापत्र में "महंगाई" शब्द एक बार भी इस्तेमाल नहीं किया गया !

दिल्ली में गैर-सब्सिडी वाले सिलिंडर की कीमतें 22% बढ़ कर, जून 2014 में 905 रुपये से मार्च 2023 में 1,103 रुपय हो गयी। हालाँकि स्मृति ईरानी का इस पर कुछ ख़ास कहना नहीं था।

खाद्य एवं कृषि संगठन की सूची पर विश्व स्तर पर खाद्य महंगाई नवंबर 2022 से गिर रही है। लेकिन **भारत में स्थिति बिलकुल विपरीत** है।भारत में लगातार बढ़ती हुई मुद्रास्फीति दिसंबर 2023 में 9.5% थी जबकि विश्व खाद्य मूल्य सूचकांक की मुद्रास्फीति -10.1% थी।

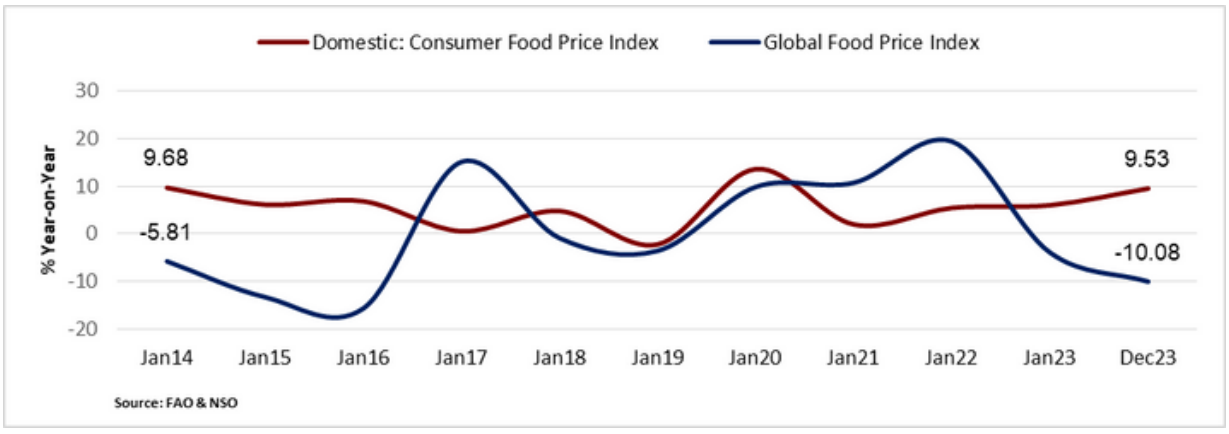

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अनुसार भारत की खुदरा मुद्रास्फीति दिसंबर 2023 में अपने चार महीने के **सबसे ऊंचे** स्तर 5.69% पर थी। भारतीय रिज़र्व बैंक का उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) की सह्यता (Tolerance) सीमा 2% से 6% है। यह खाद्य वस्तुओं जैसे दालें और मसाले की बढ़ती हुई कीमतों की वजह से है। इस बढ़ती महंगाई ने आरबीआई के टोलरेंस बैंड को **इस साल चौथी बार** तोड़ा है।

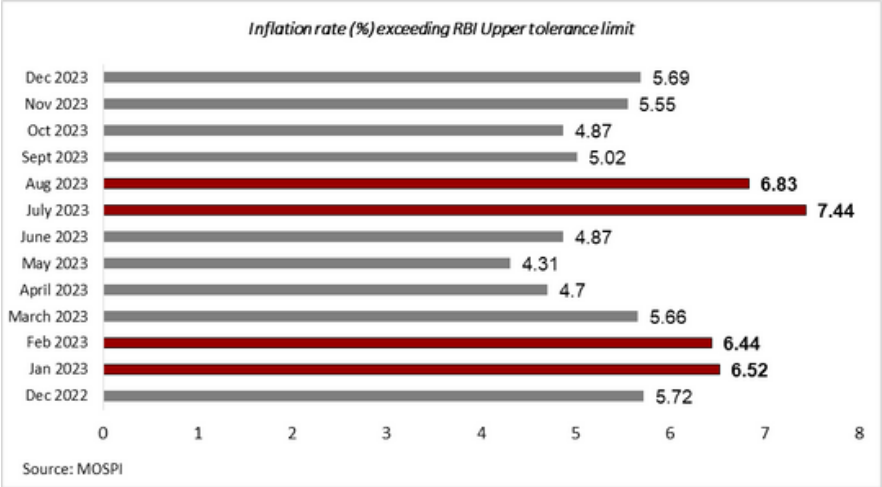

खाद्य कीमतों के दाम राष्ट्रीय स्तर पर 9.5% की दर से बढ़े और शहरी उपभोक्ताओं के लिए 10% की सीमा को पार कर गए। खाद्य मुद्रास्फीति साल दर साल लगातार बढ़ रही है जबकि मूल मुद्रास्फीति (खाद्य पदार्थ और ईंधन को छोड़कर) कम होकर 3.77% के स्तर पर आ गयी है। **लगातार 51 महीने से RBI का खुदरा मुद्रास्फीति का मध्यम अविधि लक्ष्य 4% है।**

विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार 2019 के बाद से भारत के सकल घरेलू उत्पाद अंतर्निहित मूल्य डिफ्लेटर, या जीडीपी डिफ्लेटर में भीषण वृद्धि आयी है जो कि 2019 में **2.4%** से बढ़कर 2022 में **8.2%** हो गया, औसतन **6%**। यह निम्न मध्यम आय वर्ग के देशों (**5.2%**) और उच्च आयवर्ग के देशों (**2.9**) से अधिक है।

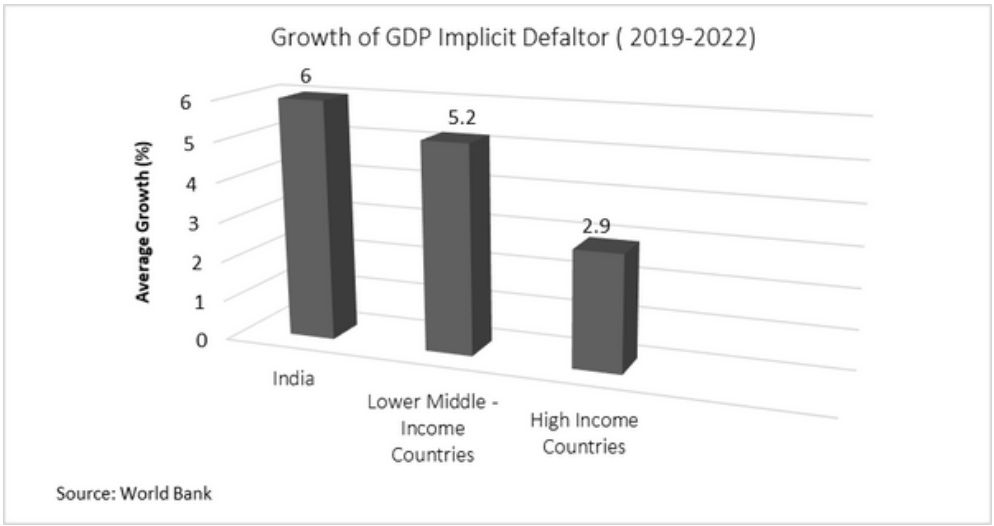

जीडीपी डिफ्लेटर क्या है?

मुद्रास्फीति के माप के लिए जीडीपी मूल्य डिफ्लेटर को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) से अधिक व्यापक मापदंड माना जाता है क्यूंकि यह उत्पादों की निर्धारित टोकरी पर आधारित न होकर अर्थव्यवस्था की कुल कीमतों पर आधारित है।

डीज़ल का उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) का मूल्य अक्टूबर 2019 में **121** बिंदु से बढ़कर अक्टूबर 2023 में **161.8** बिंदु हो गया। महामारी के दौरान ईंधन और बत्ती की मुद्रास्फीति की दर अक्टूबर 2020 में **6.2%** से बढ़ कर 2021 में **32.5%** हो गयी। ऐसा न किस्मत और ना ही केवल वैश्वक अशांति या आपूर्ति की वजहों से हुआ । मुख्यत: ये केंद्र सरकार द्वारा पेट्रोल और डीजल पर बढ़ाये गए उत्पादक शुल्क की वजह से हुआ। सरकार ने निगम कर को **30%** से घटाकर **22%** कर दिया जिसके कारण सरकारी ख़ज़ाने को केवल दो सालों में 1.84 लाख करोड़ रूपये का नुकसान हुआ। इस घाटे को सरकार ने पेट्रोल और डीज़ल पर उत्पादन शुल्क बढ़ा कर पूरा किया। पेट्रोल पर उत्पादन शुल्क **19.98** प्रति लीटर से बढ़ाकर **32.9** रूपये प्रति लीटर कर दिया गया और डीज़ल पर **15.83** रूपये से बढ़ा कर **31.8** रूपये प्रति लीटर कर दिया गया। केंद्र सरकार का उत्पादन शुल्क संकलन 2019-20 में **1.78** लाख करोड़ रूपये से बढ़कर 2020-21में **3.35** लाख करोड़ हो गया, यह वृद्धि **88** प्रतिशत थी।

हालाँकि महंगाई कोई नयी घटना नहीं है, कई लोगों का मानना है कि ज़्यादातर भारतियों की हाल के समय में स्थिर आय ने उनकी जीने के खर्च के संकट को बहुत बढ़ा दिया है। अप्रैल 2021 से मार्च 2023 के बीच जब निर्माण और खेतिहर मज़दूरों की आय ग्रामीण क्षेत्रों में केवल **10.5%** और **12%** बढ़ी, उसी समय में अनाज के दाम **22%** बढ़ गए। सूचकांक का ईंधन खंड **16%** बढ़ा और वहीँ दूध और दूध से बनी चीज़ों के दाम **14%** बढ़ गए।

वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारतीय परिवारों की कुल बचत **GDP का 5.1%** थी। यह 23 सालों में सबसे कम थी। महामारी के दौरान काम की कमी से गरीबों की बचाई हुई पूंजी बहुत कम हो गयी, और जब वो अपनी हालत में सुधार की उम्मीद लगाए थे तब ही तेज़ महंगाई ने उनकी बची खुची पूंजी भी हवा करनी शुरू कर दी क्यों की उनकी आय से बचत महंगाई का मुकाबला नहीं कर सकती थी।

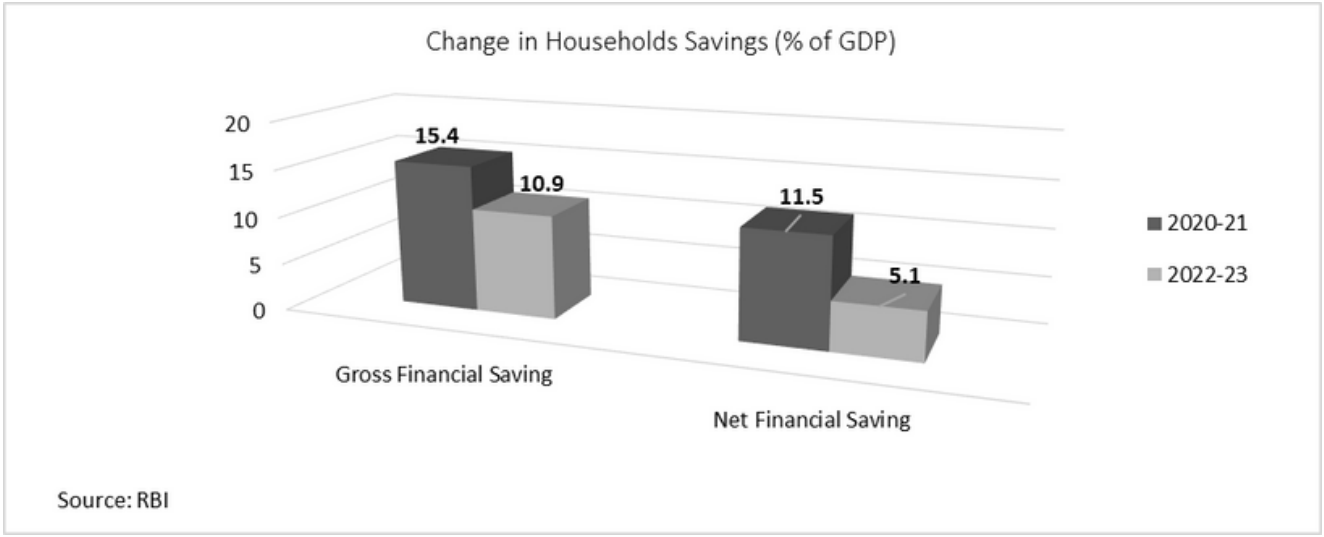

हालाँकि सरकार इस संकट के लिए केवल यूक्रेन पर हुए आक्रमण और उससे बढ़ी ईंधन की कीमतों को ज़िम्मेदार ठहरा रही है, 2020-21 के बाद से सबसे ज़्यादा महंगाई खाने की चीज़ों में देखी गयी है। अर्थशास्त्रियों के लिए सबसे बड़ी चिंता की बात यह है की इस समय में खाने की चीज़ों का उत्पादन बेहतर स्तर पर रहा। इस लिहाज़ से पहले से बढ़ी खाद्य कीमतों और पूर्वानुमानित सामान्य से कम मानसून का खाद्य उत्पादन पर प्रभाव चिंता पैदा करने वाला है।

एक घर की बनी शाकाहारी थाली की कीमत मुंबई में पिछले पांच साल में **65%** बढ़ी है। उसी समय में महाराष्ट्र के शहरी इलाकों में काम करने वाले एक अनियत मज़दूर की औसत मज़दूरी केवल **37%** और वेतनभोगी कर्मचारी का वेतन **28%** बढ़ा है।

महीने के हर दिन दो थाली बनाने का खर्च, मज़दूरी/वेतन के अनुपात में, एक अनियत मज़दूर के लिए 2018 में **22.5%** से बढ़ कर 2023 में **27.2%** हो गया। इसी अवधि में, जिन लोगों के वेतन नियमित थे, उनके लिए यह **9.9%** से बढ़ कर **12.8%** हो गया।

आरबीआई के नवीनतम **उपभोक्ता विश्वास सर्वेक्षण** के नतीजों के अनुसार वर्तमान स्थिति सूचकांक नवंबर 2023 में स्थिर रहा। यह पिछले सर्वेक्षण के **92.2** बिंदुपर अपरिवर्तित रहा। कुल मिलाकर,यह मार्च 2015 के **108.6** बिंदु से नवंबर 2023 के **92.2** बिंदु पर नीचे हुए फिसलता हुआ दिख रहा है। सर्वे के अनुसार उपभोक्ता अभी भी मौजूदा और भविष्य कीमतों के लिए नकारात्मक उम्मीद रखते हैं।

कंतार इंडिया केंद्रीय बजट सर्वेक्षण 2024 में यह दर्शाया गया है कि **57%** भारतीय बढ़ती महंगाई को लेकर चिंतित हैं। यह आंकड़ा 2023 के 27% से बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त नौकरी सुरक्षा को लेकर भी चिंताएं बढ़ रहीं हैं, और तीन में से एक भारतीय संभावित छंटनी को लेकर चिंतित हैं।

Highlights

वो गरीब लोग इस लगातार बढ़ती खाद्य महंगाई से सबसे ज़्यादा प्रभावित हैं जिनके पास एक समय के भोजन के लिए भी संसाधन नहीं हैं।इसी की वजह से कुपोषण और भारत का वैश्विक भुखमरी सूचकांक में स्थान और भी बुरा होता जा रहा है। **भारत का इस सूचकांक में स्थान 2022 में 107 से गिर कर 2023 में 111 पर आ गया। भारत के अंक 28.7 थे जो कि वैश्विक भुखमरी सूचकांक में गंभीर श्रेणी में आता है।** कुपोषित लोगों की कुल आबादी में दर 2015 में **14%** से बढ़ कर 2023 **16.6%** हो गयी।

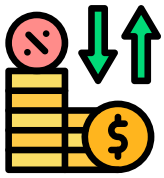

सकल घरेलू उत्पाद अंतर्निहित मूल्य डिफ्लेटर के माप में भारत और उच्च आय वाले देशों के बीच मुद्रास्फीति की दर में भारी अंतर है। उच्च आय वाले देश मुद्रास्फीति की दर कम रख सकते हैं और 2019 और 2022 के बीच उसे लक्षित बैंड 2.9% के अंदर रखते हैं, पर भारत में यह दर लगातार बढ़ रही है- 2019 में 2.4% से 2022 में 8.2%, औसतन 6% इस अवधि में।

.

भारतीय उपभोक्ताओं को महामारी के बाद ईंधन के बढ़े हुए दामों के सामना करना पड़ रहा है. मार्च 2022 में भारत में एलपीजी की कीमत विश्व में सबसे ज़्यादा थी, जिसके बाद पेट्रोल **तीसरी** सबसे ज़्यादा और डीजल **आठवीं** सबसे ज़्यादा थी, जब इसे क्रय शक्ति समता से तुलना करते हैं। भारतीय उपभोक्ताओं ने ईंधन के ऊँचें दामों को तब झेला जब वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमत गिर रही थी। यह मुख्यरूप से पेट्रोल और डीज़ल पर बढ़े हुए उत्पादक शुल्क की वजह से था। मोदी सरकार पेट्रोल और डीज़ल पर उत्पादक शुल्क को बढ़ा कर 1.45 लाख करोड़ के उस राजस्व हानि की क्षतिपूर्ति कर रही थी जो उसने निगम कर को 30% से 22% घटाकर करी थी।

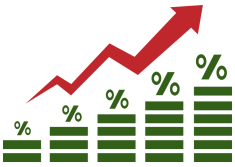

जैसा कि कीन्स ने कहा था "मुद्रास्फीति एक प्रकार का कर है जिससे जनता सबसे मुश्किल से बचती है" लगातार बढ़ी मुद्रास्फीति कि दर से उपभोक्ताओं के खपत के तरीकों पर सीधा असर पड़ता है- उसी चयनित टोकरी की कीमत बढ़ जाती है। इससे उपभोक्ताओं की व्यय योग्य आय कम हो जाती है। **YouGov** वैश्विक आर्थिक आउटलुक रिपोर्ट 2023 के अनुसार करीब **36%** शहरी भारतियों की, पिछले 12 महीनों में, व्यय योग्य आय में नेट कमी आयी है। यह कमी दूसरे अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों की तुलना में सबसे कम में से एक थी।

अगर सरकार बढ़ती कीमतों के इस बड़े भार, जिससे आम लोगों की मुश्किलें बढ़ रहीं हैं, को लेकर सचेत रहती और करों की दर को संशोधित करके महामारी के पहले (2019-20) के स्तर पर ले आती तो उसका राजस्व का नुकसान इन मुश्किल सालों में 1.19 लाख करोड़ रूपये का होता। और अगर वो सबसे अमीर 1,007 परिवारों पर, जिनकी कुलपूँजी 1,000 करोड़ रूपये से 2021 में ज़्यादा थी, पर समतल 2% का कर उनकी संपत्ति पर लगाती, तो हम केवल एक साल में 1.84 लाख करोड़ रूपये का राजस्व बढ़ा सकते थे।

सरकार महंगाई कम करने के लिए केवल मौद्रिक निति पर निर्भर है. वो रेपो दर बढ़ा रही है जिससे लोन महंगे हो रहे हैं। लेकिन कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि ये रणनीति विकसित अर्थव्यवस्ताओं में हो सकती है, लेकिन भारत में, जहाँ खाद्य कीमतें मुद्रास्फीति को बढ़ा रही हैं और जहाँ ज़्यादातर गरीब जनता के लिए खाद्य वस्तुएं खर्च का बड़ा हिस्सा हैं, यह रणनीति बेअसर है क्यों कि रेपो दर का इस पर कोई असर नहीं पड़ता है।

आरबीआई के एक पूर्व गवर्नर सहित कुछ अर्थशास्त्रियों ने ये तर्क दिया है कि पांच सबसे बड़े निजी व्यावसायिक समूह लगातार बढ़ी मूल मुद्रास्फीति में योगदान कर रहे हैं। उनका मानना है कि बाजार कि शक्तियों के कुछ हाथों में संक्रेद्रण से उनकी मूल्य निर्धारित करने की शक्ति भी बढ़ी है। नोटबंदी, GST, और तालाबंदी की तिहरी मार से छोटे कारोबार और असंगठित क्षेत्र ध्वस्त हो गए। नतीजतन मूल्य निर्धारण की शक्तियां कुछ लोगों के लिए बढ़ गयीं जबकि उसके पीड़ित गरीब और मध्यम वर्ग के लोग रहे।

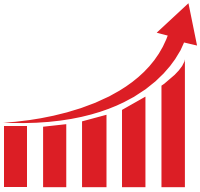

मांग आधारित बढ़ी मुद्रास्फीति फिर भी एक सकारात्मक संकेत देती है क्योंकि यह दर्शाती है कि लोगों के पास क्रय शक्ति है। लेकिन भारत मैं हम मांग कम और बढ़ी मुद्रास्फीति देख रहे हैं जो कि बिल्कुल भी एक स्वस्थ्य संकेत नहीं है। औसतन आपूर्ति पक्ष कारकों ने उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) की हैडलाइन मुद्रास्फीति में जनवरी 2019 से मई 2023 में 55% का योगदान दिया वहीँ मांग पक्ष का मुद्रास्फीति में योगदान इसी दौरान 31% था।

निजी क़र्ज़ और क्रेडिट कार्ड की ऊँचे ब्याज दर पर खरीद ने मुद्रास्फीति बढ़ाया वहीँ कमाई की स्थिरता ने लोगों पर और बोझ डाला।

सरकार ने माना कि 80 करोड़ लोग गरीबी में जी रहे हैं लेकिन वो उन्हें केवल 5 किलो चावल या गेहूं देती है।
वो लोग कैसे ज़िंदा रहेंगे?

बाकी रिपोर्ट कार्ड केलिए: https://www.fanindia.net/indian-economy/balance-sheet-of-a-decade/